

Man's search for meaning

अगर आपको ऐसा लगता है कि आप अपने जीवन में सबसे कमजोर समय से गुजर रहे हैं तो आपको ये बुक जरूर पढ़नी चाहिए।

विक्टर फ्रेंकल ने वॉर में अपना सब कुछ खो दिया - परिवार, अपनी पहचान और प्रोफेशन, उनके पास जो कुछ भी था वो उनका अंतर मन था, फ्रेंकल आपको अपने लाइफ में मीनिंग कैसे खोजना है वो सिखाएंगे। वो आपको ये देखना सिखाएंगे की जब आप जिंदा है तब तक कहीं न कहीं होप भी जिंदा है।

ये बुक किसे पढ़नी चाहिए

जिन लोगो ने किसी अपने को खोया है, जिन लोगों के साथ कोई दुर्घटना हुई है, जिन लोगो को जिंदगी में नए मकसद की जरूरत है

introduction

ये कहानी एक आम से कैदी के रोजमर्रा की जिंदगी के बारे में है। इसमें उन भयानक बातों का कोई खास जिक्र नहीं किया गया है जो सेकंड वर्ल्ड वार के दौरान हुई थी। इस बारे में बहुत की किताबें छप चुकी हैं। कई कहानियां लिखी जा चुकी हैं इस विषय पर। हमारी कहानी उस आम आदमी के बारे में है जो अपना सब कुछ खो चुका था यहां तक कि अपनी पहचान भी। और ये उस स्ट्रगल कि कहानी है जो खुद की पहचान बनाए रखने की कोशिश में है, बावजूद उन तमाम जुल्मों सितम के उस कन्सन्ट्रेशन कैंप में किए गए थे।

उन बेनाम कैदियों की कहानी जो सिर्फ एक नंबर से ज्यादा और कुछ नहीं थे। उनकी पहचान और इज्जत छीन कर उन्हें जानवर के नाम से पुकारा जाता था। हम कोई हीरो या शहीद नहीं थे, हैं सिर्फ हड्डियों और मांस का ढांचा भर थे। जिन्हें अपने पेट की भूख मिटाने के लिए रोटी के टुकड़ों के साथ साथ इंसान बने रहने की जद्दोजहद भी करनी पड़ती थी। ये माना जाता है कि साइकोलॉजी की स्टडी करने के लिए सख्त दिल होना पड़ता है। हा, शायद इसीलिए कन्सन्ट्रेशन कैंप के कैदी की दर्द भरे दास्तां को कोई बाहरी इंसान समझ नहीं सकता। ये वो ही समझ पाएगा जिसने उस दुनिया को करीब से देखा हो।

मैं इस किताब को गुमनाम तरीके से छपवाना चाहता था। मैं नहीं चाहता था कि कोई भी मेरे मेरे कैदी नंबर के अलावा कुछ और मेरे बारे में जाने। मगर फिर मुझे अहसास हुआ कि मुझे हिम्मत करके आगे आकर अपनी पहचान बतानी चाहिए। जिससे ज्यादा से ज्यादा लोग ये किताब पढ़ें। मैंने कैप में साइक्रोट्रस्ट के तौर पर काम नहीं किया था। अपनी आजादी से खींच ही हफ्तों पहले तक मैं एक बीमार कैदी था। तीन साल मैंने उस जेल में बिताए थे। मैं ज्यादातर रेलवे लाइन पर काम करता था मेरा काम था ट्रैक तोड़ना। और मैं हमेशा लेइंग और खुदाई का काम करता था

एक दिन मैंने एक टनल अकेले की खोदी। ये 1944 की बात है, उस साल क्रिसमस पर मुझे प्रीमियम कूपन मिले। मेरे पास पूरे 12 कूपन थे। इसके बदले मैं 12 सिगरेट या 12 सूप ले सकता था। हम कंस्ट्रक्शन फॉर्म में गुलामों की तरह बेचा गया था। जिसके बदले मैं कंस्ट्रक्शन कंपनी को फॉर्म की तरफ से हर एक कैदी के बदले मोटी रकम दी गई थी। और इस तरह मैं भी कैदी नंबर 119, 104 बनकर रह गया था।

phase 1: camp me admission

कैप में रहते हुए मैंने कैदियों के साइकोलॉजिकल रिएक्शन के तीन फेस को बारीकी से देखा और समझा। पहला फेस होता था कैप में एडमिशन, दूसरा रूटीन और तीसरा लिबरेशन। जब भी कोई कैदी कैप में लाया जाता तो वहां के हालात देखकर गहरे सदमे में चला जाता था। हमने कई दिनों तक ट्रेन से सफर किए। कैदियों को ठूस ठूस कर कैरज में भरा गया था। केवल उपरी हिस्से में सांस भर लेने की कुछ जगह बची हुई थी। हर कोच में अस्सी के करीब कैदी थे। हमें लगा कि हमें पोलैंड में मजदूरी के लिए ले जाया जा रहा है।

मगर हम डर से कांप उठे जब हमारी ट्रेन Auschwitz पर आ रुकी। Auschwitz का मतलब था कब्रिस्तान और गैस चेंबर। फिर जल्द ही हमें वॉच टॉवर, कांटेदार तारों वाली ऊंची दीवार और कैदियों की लंबी कतारें दिखाई दे गया। हमारे कैरज के दरवाजे खुले। धारीदार यूनिफॉर्म पहने हुए कुछ कैदी अंदर दाखिल हुए जिनके सिर मुंडा हुआ था, और सेहत भी ठीक लग रही थी। उन लोगों के पीछे पीछे हम एक शेड में पहुंचे। जो खास कैदी हमें अपने साथ ले गए इन्हें कैपोस कहा जाता था ये लोग कैप में गार्ड के हैसियत से रहते थे। आम कैदियों की तरह इन्हें भूख प्यासा नहीं रखा जाता था। इनमे से

कई तो ऐसे भी थे जो यहां रहकर पहले कि जंदगी से ज्यादा खुश थे। ये सारे कैपोस असली गार्ड से ज्यादा जल्लाद होते थे।

हर शेड में 200 कैदियों को रखा गया था। हमारी ट्रेन में कुल 1,500 मुसाफिर थे जो यहां लाए गए थे हम सब यहां सही सलामत रहने की दुआ कर रहे थे। हमें अपना सामान ट्रेन में छोड़ने का हुक्म मिला। फिर हमें लाइन में खड़ा किया गया। आदमी और औरत को अलग अलग लाइन बनाई गई। एक ऑफिसर ने हम सब की जांच की। वो हमें लेफ्ट या राइट में जाने का इशारा कर रहा था। हममें से ज्यादातर लेफ्ट की तरफ रखे गए। उसके एक इसारे ने हमारी जिंदगी का फैसला कर दिया था। मुझे किसी ने कान में बताया की जो राइट में भेजे गए हैं उनसे काम लिया जाएगा। और जो लेफ्ट में भेजे गए हैं वो बीमार और बेकार है।

जब मेरी बारी आई तो मैंने हर तरह से चुस्त दुरुस्त दिखने की कोशिश की। और मेरे सामने खड़े आदमी ने मुझे राइट का इशारा दे दिया। लेफ्ट का मतलब था मौत। और हममें से 90% लोगो का किस्मत का फैसला यही था। और कुछ ही घंटो बाद उन्हें स्टेशन से क्रिमेटेरियम में के जाया गया जहां एक इमारत थी जिसके बरे से दरवाजे में अलग अलग यूरोपियन भाषाओं में "bath" लिखा हुआ था। हर कैदी को एक छोटा साबुन तो दिया गया,मगर सावर में पानी नहीं था। उसी साम मुझे सच्चाई पता चली जब मैं एक दूसरे कैदी से अपने साथी के बारे में पूछताछ की जिसे लेफ्ट में जाने का ऑर्डर मिला था।

उस कैदी ने चिमनी कि तरफ इशारा करते हुए कहा " तुम्हारा दोस्त वहां से जन्नत कि सैर करेगा" हा मेरा दोस्त सच में जन्नत पहुंच गया था क्योंकि जर्मन में उसे जिंदा है जला डाला था उस गैस चैंबर के अंदर। जो लोग कमजोर थे उन्हें कैप के लिए बोझ समझा गया और उनकी किस्मत में मौत लिख दी गई थी। यही उनका तरीका था और इसीलिए वहां इंसानी जान कि कोई कीमत नहीं थी। हममें से को लोग राइट में गया उन्हें गार्ड अपने साथ काम पर लेकर गए। हमें क्लीनिंग स्टेशन की तरफ भागने को कहा गया। हम कैप के चारों तरफ लगी कांटेदार तारों के पास से गुजरे। इन कांटेदार तारों में बिजली की करंट दौड़ रही थी।

गार्ड ने हैं सब को बारी बारी से जांचा। उनकी आंखे हमारी घरीयो और जेवरों पर थी। फिर हमें एक कम्बल दिया गया जिसमे हमें अपनी सभी चीज़े डालनी थी। कुछ लोगों ने अपनी मेडल या शादी की अंगूठी रखने की गुहार की मगर किसी को भी अपने पास कुछ भी रखने की इजाज़त नहीं मिली।

फिर एक गार्ड ने चिल्लाकर 2 मिनट के अंदर सभी को अपने कपड़े उतारने को बोला सिर्फ जूते छोड़कर। हम सब वहीं पे लाइन में खड़े खड़े नंगे कर दिए गए जिन्होंने बेल्ट नहीं उतारी थी गार्ड ने उन पर कोरे बरसाए।

हमें एक कमरे में ले जाकर सेव कराया गया। हमारे बदन पर एक बाल तक नहीं छोड़ा गया। हम खुद को है नहीं पहचान पाए रहे थे। उसके बाद फिर से हम सब लाइन में लगे नहाने के लिए ये गनीमत थी को स्प्रे से सही में पानी आ रहा था ना कि कोई गैस। मेरे बदन में चस्मे के अलावा कुछ नहीं था एक बाल तक नहीं थी। हम खुद को पूरे नंगेपन के साथ देख रहे थे। इसके अलावा और चारा भी क्या था हमारे पास? बदन पे एक भी रेसा नहीं, अपनी कोई भी चीज अपने पास नहीं, अपने नंगेपन को छुपाने की खातिर बदन के बाल तक नहीं। हम नंगे गीले उही खड़े थे " अब आगे क्या होगा" यही सोचते हुए

phase 2: routine aur nirasha se bhare din

उस रात मैंने दूसरे आठ कैदियों के साथ आठ फीट की एक कोठरी में रहा। वहीं हमारा बिस्तर था जिसमें हम सब एक दूसरे से चिपके हुए लेट गए थे। हमें आठ लोगो को ओढ़ने के लिए दो कंबल दिए गए थे। ये बात झूठ है जब कोई बोलता है कि वो इसके या उसके बगैर नहीं सो सकता । हम उस तंग जगह पर किसी तरह नींद भर सोने की जद्दोजहद कर रहे थे। अगले कुछ घंटों के लिए हम दर्द से आज़ाद थे । हम बगैर दांत मांजे अपने दिन कि शुरुआत किया करते थे। महीनों तक हमें कपड़े बदलने का मौका नहीं मिलता था क्योंकि पूरे तरीके से फटे हुए कपड़ों के अलावा हमारे पास और कुछ नहीं था।

नहाना भी हमें मुश्किल से नसीब होता था। काम करते करते हमारे हाथों पर छाले पड़ जाते थे लेकिन दवा का कहीं कोई नाम नहीं था। बिजली के तारों को छूकर खुदकुशी करने का खयाल हम सब के जेहन में आया था । हमें हर वक्त ये डर सताता था कि कहीं हमें भी बाकियों की तरह गैस चेंबर में जाकर ज़िंदा ना जला दे। उपर से गार्ड अक्सर हमें बेवजह पीटा करते थे। हम ज़िन्दगी से पूरी तरह नाउम्मीद हो चुके थे। हमें हर वक्त ऐसा लगता था कि मौत हमारे सर पर नाच रही है और कब किस वक्त हमें दबोच लेगी कुछ पता नहीं।

हमारे साथ एक दूसरा डॉक्टर भी था जो मेरा ही साथी था। वो अपने कोठरी से बचकर हमारी कोठरी में आ गया था। वो हमारे Auschwitz पहुंचने से हफ्ते भर पहले ही आया था , और उसी ने हमें बताया कि "अगर ज़िंदा रहना चाहते हो तो एक ही रास्ता है, यहां काम करने के लिए खुद को फिट दिखाते रहो" यहां बहुत से कैदी हैं जो बीमार हैं, बहुत निराश और दुखी लगते हैं, ऐसे लोगों को गैस चेंबर में जाकर ज़िंदा जला दिया जाता है, इन्हें ये लोग "मोस्लेम" कहकर बुलाते हैं। कन्सन्ट्रेशन कैंप में रहते हुए हम सब अपनी जिंदगियों से बहुत मायूस हो चुके थे। बचने का कोई रास्ता नजर नहीं आता था।

जिस दिन से हम कैंप में आए थे, अपने घर और परिवारवालों की याद में तरप रहे थे। जो हमने देखा वो हमारे लिए एक भयानक सपना की तरह था। बेहद घिनौना और डरावना। मगर आने के बाद हम सब उन सब चीजों के आदी हो चुके थे। हम इतने निराश थे जिंदगी से कि अब हमें कुछ भी महसूस नहीं होता था। एक भिखारी के कपड़े भी शायद हमसे बेहतर होते होंगे। जो यूनिफॉर्म हमें मिली थी वो सिर्फ चिथरे थे और कुछ नहीं। हमें रहने के लिए कोठरियां दी गई थी। अगर कोई दूसरी कोठरी में जाता दिखता तो उसे कड़ी सजा मिलती थी। उन कोठरियों में हम अपनी सारे काम करते थे, खाना, सोना यहां तक कि टट्टि भी।

हमारी कोठरियां एक तरह नरक से भी बदतर हालात में थी। जो नए कैदी लाए गए उनकी हालत और भी खराब थी। उनसे लैटरिंग साफ करवाई जाती थी। माना करने कि कोई गुंजाइश नहीं थी, जो मना करते उसके मुंह पर टट्टि मल दी जाती। और जो गंदगी को हटाने की कोशिश करता उसे केपोस की मार झेलनी पड़ती। अक्सर कैदियों कि पनिशमेंट परेड निकली जाती थी। उन्हें कैंप के चारों ओर कई कई घंटे गार्ड से मार खाते हुए चक्कर लगाने पड़ते थे। एक 12साल के लड़के को सजा के तौर पर बर्फ पर नंगे पैर खड़े होने का हुक्म मिला। बहुत देर तक उसी हालात में रहने से उसे frostbite और gangrene हो गया था।

ये हर रोज की बात थी जब हम लोगों को दर्द से तड़पते हुए और मरते देखते थे। ये अब हमें बेहद आम लगने लगा था। हमें अब कुछ भी महसूस नहीं होता था। ना कोई दर्द ना दुःख ना दया और नाही हमारे मन में डर था। गहरे सदमे की हालत में हम इन सब इंसानी जज्बातों को भूल चुके थे एक खालीपन था जो हमारे भीतर बसा हुआ था। ऐसा खालीपन जिसमें अब जज्बातों के लिए कोई जगह नहीं थी। मुझे एक बार टायफायड के बीमार कैदियों के कोठरी में रखा गया। उनकी हालत बहुत खराब थी। सबको तेज बुखार चढ़ा हुआ था और वो बहुत जोरो से कांप रहे थे। कई लोग तो मेरी आंखों के सामने ही मर गए। हर मौत के बात दूसरी कैदी मरने वाले कैदी पर टूट पड़ते थे। कोई मरे हुए का कोट झपट लेता था तो कोई उसके जूते और कोई उस कैदी का बचा हुआ खाना खा जाता था। सिर्फ दो घंटे पहले ही तो मैं उस आदमी से बारे कर रहा था अब उसके मरते ही वहां हड़बड़

मच गई। उसके चिजो को हथियाने की छीन झपट चल रही थी। उस शोर गुल के बीच मैं भी चुपचाप अपना सूप पिता रहा।

Phase -3 AAZAADI

जो कैदी बीमार थे उन पर सिर्फ इतना ही रहम किया जाता था कि वे एक कोठरी में जाकर सारा दिन बोर्ड पर लेते रहते थे। उनसे कोई काम नहीं लिया जाता था। इसके बदले में उन्हें बाकियों के मुकाबले ना सिर्फ घटिया दर्जे का खाना दिया जाता था बल्कि कोई दवा या मेडिकल सप्लाई भी नहीं मिलती थी। एक डॉक्टर ने टायफस के रोगियों के इलाज में मेरी मदद मांगी। मुझे बवारिया में बीमार लोगो के कैप में भेजा गया। वहां मुझे 50 मरीजों से भरे हुए एक कोठरी में मदद के लिए रखा गया। वे सब बुखार से तप रहे थे और अपने होश में नहीं थे।

अपने कोठरी के लिए मेडिकल सप्लाई लाना भी मेरा ही काम था। जो केवल 10 बुखार की गोलियां थी। जो बहुत सीरियस होते थे केवल उन्हें है एस्प्रीन की आधी गोली दी जाती थी। लाईलाज मरीजों के लिए कोई दवा नहीं थी। मैं हर बीमार की नब्ज चेक करता था। अपना राउंड पूरा करने के बाद मैं एक कोने में बैठ जाता था जहां से मुझे बावरिया को लैंडस्केप नजर आया करता। मेरे चारों तरफ कीड़ों से भरी हुई लाशें पड़ी रहती थी। मगर मैं बाहर के नज़ारे देखता हुआ यूँ लम्हों में खो जाता था। कन्सन्ट्रेशन कैप में हालात बद से बदतर होते जा रहे थे। कुछ कैदी अपनी भूख मिटाने के लिए नरभक्षी बन चुके थे। हम लड़ाई के मैदान में खड़े थे।

उसी दौरान मैंने एक साथी के साथ मिलकर भागने की कोशिश की। कैप के बाहर उसका एक साथी हमें नकली डॉक्यूमेंट और यूनिफॉर्म के साथ मिलने वाला था जिससे हम वहां से निकल सके। हम कुछ एक समान चुराने के लिए वापस अपनी कोठरी में गया। मैंने एक बैग में टूथब्रश, खाना खाने के बर्तन और फटे हुए दस्ताने डाल लिए। पहली कोशिश में ही मैं पछतावे से भर गया। मैं ऐसे कैसे बीमार साथियों को छोड़ सकता था। मैंने आखिरी बार एक राउंड लगाने का फैसला किया और जब मैं राउंड लगा रहा था तो उनमें से एक बीमार ने पूछा "क्या तुम भी बाहर निकल रहे हो?"

मैंने उनकी आंखों में गहरी उदासी और ढेर सारा दर्द देखा। मैंने बाहर इंतजार कर रहे साथी से कहा कि मैं नहीं भाग पाऊंगा। लेकिन कैप में मेरे आखिरी दिन भी आया जब बटलफ्रंट हम तक पहुंच गया था। सारे गार्ड और कैपोज भाग चुके थे। सभी कैदियों को बारी तादाद में वहां से के जाया जा रहा था। सबको सूरज डूबने से पहले वहां से निकालना था क्योंकि वे लोग पूरे कैप को जलाने वाले थे। बस केवल वही लोग कैप में बच गए थे जो बीमार थे। वे अभी अभी कोठरियों में बुखार और बेहोशी की हालत में पड़े हुए थे।

मैं और मेरा साथी वहां से निकलने के लिए तैयार थे। हमें तीन लाशों को कैंप के बाहर दफनाने का आदेश दिया गया। हम भागने ही वाले थे कि तभी कैंप के गेट खुले। बड़ा से रेड क्रॉस के झंडा वाली एक कार अंदर दाखिल हुई। ये इंटरनेशनल रेड क्रॉस का डेलिगेशन था। उन्होंने कहा कि हम सब सुरक्षित हैं। सबको दवाइयां और खाना बांटी गई। सबको वहां से बाहर निकाला जा रहा था। मगर मैं और मेरा साथी पीछे छूट गए थे। हम टायफस के मरीजों के साथ कोठरी में रुके रहे। आधी रात को डॉक्टर आय और चिल्लाए की हम खुद को कवर कर ले। हमें गंशोट्स, कैन्नन और राइफल की आवाजे सुनाई पर रही थी। हम जंग के मैदान के बीचों बीच थे। मगर सुबह कि पहली किरण के साथ ही सब कुछ थम गया था। कैंप के बाहर एक सफेद झंडा फहरा दिया गया था। मेरा नंबर 119104 सफर का को आखिरी दिन था।

Thanks